प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रसांगिकता व उपादेयता

विनोद कुमार
स्नातकोतर हिन्दी, शिक्षा स्नातकोतर,
राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा

प्रस्तावना :-

संसार में विज्ञान और प्रोधोगिकी का बड़ी तेजी के साथ विकास हो रहा है । भारत में भी विकास की यह लहर तेजी से फ़ैल रही है । भारत में प्रोधोगिक स्तर पर विकास ज्ञान-विज्ञान और अन्य विभिन्न क्षेत्रो की सही अभिव्यक्ति के लिए अनिवार्य हो गया है । हिंदी भाषा इसके लिए एक उतम उदाहरण है कि यह ज्ञान-विज्ञान और अन्य क्षेत्रो की सार्थक अभिव्यक्ति के लिए सक्षम है । विज्ञान प्रधान इस युग में प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रसांगिकता और उपादेयता पर चर्चा आवश्यक हो गई है । इस शोध पत्र के द्वारा प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रसांगिकता व उपादेयता दर्शाने का प्रयास किया गया है ।

मुख्य शब्द : हिंदी, प्रयोजनमूलक, प्रसांगिकता व उपादेयता

प्रयोजनमूलक हिंदी का अर्थ एवं परिभाषा :-

भाषा के विभिन्न रूपों के अंतर्गत सामान्य भाषा, साहित्यिक भाषा और परिनिष्ठित भाषा आदि आते है । इन रूपों के अलावा भाषा का एक अन्य रूप भी है । जिसे प्रयोजनमूलक भाषा की संज्ञा दी गई है । आधुनिक युग की आर्थिक व्यावसायिक, वैज्ञानिक और प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के उदेश्य से ही भाषा के इस रूप का विकास हुआ है । 'प्रयोजनमूलक' शब्द 'प्रयोजना' शब्द में 'मुलक' प्रत्यय लगने से बना है । 'प्रयोजना' का अर्थ है - 'उदेश्य' और मूलक का अर्थ है - 'आधारित' । इस प्रकार प्रयोजनमूलक भाषा का अर्थ किसी विशिष्ट उदेश्य पर आधारित भाषा है ।

प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रसांगिकता :-

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है । बोलने व समझने वालो कि संख्या के अनुसार हिंदी विश्व में तीसरे क्रम की भाषा है । यानी की हिंदी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है । एक समय था जब सरकारी - अर्ध सरकारी या कार्यालयीन पत्राचार के लिए अंग्रेजी को ही एकमात्र सक्षम भाषा समझा जाता था । लेकिन अंग्रेजी की उकत महानता आज सत्य से टूटी किसी चेतना की तरह बेकार सिद्ध हो रही है । क्योकि हिंदी में अत्यंत बढ़िया एवं प्रभावी पत्राचार संभव हुआ है । जो लोग कभी हिंदी को अविकसित भाषा कहते थे, कभी खिचड़ी तो कभी कलिष्ट भाषा कहते थे और अंग्रेजी की तुलना में हिंदी को नीचे दिखाने की मुर्खता करते थे आज उन्हें

भी लगने लगा है कि हिंदी वास्तव में संसार की एक महान भाषा है ၊ प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण एवं संपन्न भाषा है၊

"**प्रयोजनमूलक हिन्दी** (Prayojanmulak hindi)में प्रयोजन शब्द का अर्थ है- श्उद्देश्यश। जिस भाषा का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए किया जाएए उसे श्प्रयोजनमूलक भाषाश् कहा जाता है हिंदी में प्रयोजनमूलक हिन्दी शब्द ' निदबजपवदंस संदहनंहम ' के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा हैए जिसका तात्पर्य है- जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लायी जाने वाली भाषा।श् इसका प्रमुख लक्ष्य जीविकोर्पान का साधन बनना होता है। यह हिंदी साहित्य तक सीमित नहीं हैए बल्कि प्रशासनए कार्यालयए मीडियाए बैंकए विधिए कृषिए वाणिज्यए तकनीकीए विज्ञापनए विज्ञानए शैक्षिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग में ली जा रही है। विभिन्न व्यवसायों से संबंधित व्यक्तियों जैसे- डा ॅक्टरए वकीलए पत्रकारए मीडियाकर्मीए व्यापारीए किसानए वैज्ञानिक आदि के कार्य-क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा ही श्प्रयोजनमूलकश् भाषा कहलाती है।" (www.hindisahity.com/pryojanmulak-hindi/)

आज अनेक नये क्षेत्रो में हिंदी का प्रचार एवं प्रसार होता है ၊ जैसे – रेलवे प्लेटफार्म, मंदिर, धार्मिक संस्थानो आदि आज जीवन के अनेक प्रतिष्ठित क्षेत्रो में भी अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग किया जाता है၊ कानून और न्यायालय, विज्ञान और तकनीकी शिक्षा, वाणिज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रो में हिंदी का व्यापक प्रयोग सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है ၊ भारतीय व्यापारी आज हिंदी की उपेक्षा नही कर सकते उनके कर्मचारी, ग्राहक सभी हिंदी बोलते है၊ आज हिंदी का व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रो में अलग-अलग प्रयोजना से प्रयोग किया जाता है ၊ सरकारी कार्यलयो में हिंदी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है तो बैक में हिंदी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है၊

प्रयोजनमूलक हिंदी की उपादेयता :-

संसार की प्रत्येक भाषा अपने विभिन्न संदर्भो के दायरे में अर्थपूर्ण होती है၊ लेकिन वही भाषा बदलते समय के साथ जीवन का मुहावरा बन जाती है ၊ वह इस समय के राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जन आंदोलनों के इतिहास को अपने अन्दर समेटने के साथ साथ टूटते हुए मानवीय रिश्तो, नष्ट होते मानवीय जीवन मूल्यों की साक्षी भी होती है၊ वह नैतिक अतिक्रमणों और शोरगुल, आतंक और अशांति तथा विद्वेष और उन्माद के विरुद पुख्ता हथियार बनती है၊ अतः ऐसी स्थिति में प्रयोजनमूलक हिंदी की उपादेयता पर सवाल क्या दागना जो इस देश में एक ही साथ राष्ट्रभाषा, मात्रभाषा तथा संपर्क भाषा आदि अनेक संकल्पनाओ को साकार करती है၊ जो इस देश के बहुसंख्यको की भाषा है, जो जन-जन की भाषा है, जो अनेक प्रान्तों की मुख्य भाषा है ၊ जो पढने – लिखने तथा समझने की दृष्टी से बेहद आसान है ၊ जो इस देश की सभ्यता और संस्कृति की वाहिका है ၊ जिसमे वैज्ञानिक, तकनीकी तथा मिडिया आदि से सम्बब्धित सभी विषयों को अभिव्यक्त करने के अपूर्व क्षमता है ၊

प्रयोजनमूलक हिंदी की उपादेयता असंदिग्ध है ः प्रयोजनमूलक हिंदी की स्वीकृति आधुनिक युग की महती आवश्यकता है ः हिंदी के अध्यन्न की एक नई दिशा प्रदान करने में इसकी अहम् भूमिका हैः आज महिला एवं पुरुषो को फैक्ट्रियो, मिलो,बैंको, उद्योगों न्यायालय तथा सरकारी, अर्धसरकारी एवं निजी कार्यालयों आदि में हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन और अवसर प्रदान किये जा रहे हैः हिंदी के अंतर्गत ज्ञानात्मक व ललित पक्ष के अध्ययन में भी प्रयोजना निहित हैः जो पड़े-लिखे विद्वानों की ज्ञान पिपासा को शांत करता हैः प्रयोजनमूलक हिंदी सरल, सुबोध तथा जन सामान्य के उपयोग की भाषा हैः इस प्रजातांत्रिक युग में मजदुर, किसानो तथा कार्यालयों में काम करने वालो लिपिकों को ही नहीं अपितु अधिकारियो के लिए भी प्रयोजनमूलक हिंदी अत्यंत आवश्यक हैI अन्यथा वे अपने अधीन लिपिकों से तादात्म्य नही बिठा पाएंगे I उन्हें भी अंग्रेजी का मोह छोडकर हिंदी की और आना पड़ेगा I

"प्रयोजनमूलक हिंदी एवं सामान्य हिंदी एक ही भाषा के दो रूप हैए परन्तु उनकी शब्दावलीए वाक्य-संरचना आदि भिन्न-भिन्न होती है। सामान्य भाषा मनुष्य की पहली आवश्यकता है लेकिन प्रयोजनमूलक भाषा की आवश्यकता उसके बाद होती है। प्रयोजनमूलक भाषा का क्षेत्र सीमित होता है। किन्तु सामान्य हिंदी का क्षेत्र विस्तृत होता हैI" (www.hindisahity.com/pryojanmulak-hindi/)

निष्कर्ष :

निष्कर्ष तोर पर हम कह सकते है कि साहित्य भाषा को प्रतिष्ठा तो दे सकता है लेकिन विस्तार नही दे सकता I यदि भाषा को कोई विस्तार दे सकता है तो उसका प्रयोजनमूलक स्वरूप है प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिंदी का विश्व स्तर पर प्रसार हुआ है हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास के कारण ही आज सम्पूर्ण भारत में हिंदी को समझने और बोलने वाले मिल जाते है आज पत्रकारिता श्रव्य माध्यम दूरदर्शन और चलचित्र के माध्यम से विदेशो में भी हिंदी का प्रसार हुआ है इन क्षेत्रो के माध्यम से हिंदी के प्रयोग का ज्ञान आज हिंदी को प्रतिष्टित कर सकता है I

सन्दर्भ :

1. प्रतियोगिता दर्पण, जनवरी,अंक 2016
2. प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप सम्पादक मिथिलेश वामनकर
3. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका, लेखक केलाश्नाथ पाण्डेय